NAME OF THE TEACHER - SHIVI SINHA
DESIGNATION - ASSITANT PROFESSOR (GUEST)
COLLEGE - VAISHALI MAHILA COLLEGE
CLASS TEACHING - B.A. PART-II (SUBSIDIARY)
SUBJECT - PHILOSOPHY

Scanned with CamScanner

SHIVI SINHA
Assistant Prof.
(Guest)
VAISHALI MAHILA COLLEGE

Philosophy Subsidiary

B.A.-II (Subsidiary)

Nature of Philosophy

Date: 29/8/2020

Topic - Nature of Philosophy (Continued)
विषय - दर्शन का स्वरूप (Continued)

दर्शन के स्वरूप को जिस रूप में ऊपर उपस्थित किया गया है, अथवा यों कहें कि दर्शन की जो परिभाषा ऊपर दी गई है, वह उसकी परम्परागत परिभाषा है। यानी, प्रारम्भ से लेकर एक बहुत लम्बे समय तक दर्शन को प्रायः इसी रूप में समझा गया है। परन्तु, आधुनिक काल में दर्शन के प्रति कम-से-कम पाश्चात्य दृष्टिकोण वही नहीं है जो पहले था। भारतीय दृष्टिकोण शायद अभी भी वही है यद्यपि यहाँ भी अब अनेकों विचारक दर्शन के स्वरूप के संबंध में कुछ दूसरे ढंग से सोचने लगे हैं।

परन्तु पाश्चात्य विचारकों ने यह महसूस किया प्रथम विश्वयुद्ध के आस-पास एक क्रान्तिकारी परिवर्तन आया और इस विफलता का कारण उन्होंने दर्शन की अनाधिकार चेष्टा को बतलाया। उन्होंने कहा कि दर्शन, जो कुछ भी करता है वह तथ्य संबंधी में तथ्यात्मक खोज वैज्ञानिक अनुसंधान का विषय है और इसलिए विज्ञान ही अब प्रश्नों का उत्तर देने में सक्षम है, जिनका उत्तर दर्शन देने की चेष्टा करता है।

Scanned with CamScanner

इसलिए इन विचारकों ने यह मत व्यक्त व्यक्त किया है कि दर्शन का कार्य तथ्य संबंधी खोज नहीं बल्कि अवधारणाओं, पदों तथा प्रतिज्ञप्तियों का विश्लेषण कर उनके अर्थ को स्पष्ट करना है। विशेष तौर पर यह कहा गया कि विज्ञानों से संबंधित अवधारणाओं का ही विश्लेषण करना दर्शन का कार्य है, चूँकि वृन्दों में सार्थक वाक्य पाये जाते हैं, तत्त्वमीमांसा, धर्म, नीतिशास्त्र आदि के वाक्य तो निरर्थक हैं। जिन विचारकों ने इस प्रकार की विचारधारा को प्रश्रय दिया उन्हें तार्किक अनुभववादी कहा गया तथा उनकी विचारधारा को तार्किक अनुभववाद